Printing Area

Issue-104, Vol-02, August 202[illegible]
[illegible] Reviewed International Multilingual [illegible]

Dr.Bapu G.[illegible]

INDEX

01) AN INDIAN PERSPECTIVE ON DIRECT TAXES: PERSONAL INCOME....
Dr. N. P. Biradar, Babaleshwar, Vijayapur, Karnataka ||09

02) FINANCIAL PERFORMANCE ANALYSIS WITH REFERENCE TO CANARA BANK
Harshitha M. ||12

03) Spatial Pattern of Land Utilization and Agricultural Scenario in Mahanadi....
DR. (SMT.) NIVEDITA A. LALL, DR. ASHIS KUMAR MAJHI, Rajnandgaon ||16

04) Comparison of Selected Psychological and Physiological Variables at.....
Dr. Rajnikant Patel, Vallabh Vidyanagar ||25

05) An Analysis of Key Factors of Customers Preferences for Digital Payment....
Dr. Rupali Shah, Ms. Bhavini Parmar, Surat ||28

06) AN ANALYTICAL STUDY ON CONSUMER'S ATTITUDE TOWARDS DIRECT....
Gulshan Kumar Singh, Bhagalpur, Bihar, India ||34

07) Study of Perennial Oppression of Women in India: Measures of ....
Devyani Tomar ||40

08) Rural Settlement Pattern in Nanded District: A Geographical Review
Dr. Sanjay Raosaheb Sawate, ShirurKasar, Dist. Beed. ||48

09) PERFORMANCE ANALYSIS OF JUNIOR ARCHERS OF 1ST "KHELO INDIA"....
Dr. Jaydeep Sharma, Chalesar Campus Agra ||51

10) IMPACT OF ONLINE LEARNING ON ACADEMIC ATTITUDE TOWARDS TEACHING
Akanksha ||54

11) भारतीय शेती उद्योगाचे आधुनिकीकरण
प्रा पंकज पुरुषोत्तम मानकर, प्रा डॉ जे.डी.पोरे, खामगाव ||58

12) उद्योजगतांच्या सामाजिक जबाबदारीचे कृषी क्षेत्रातील लाभार्थ्यांच्या सुधारित
श्री. पंढरी रामभाऊ गोरे, अमरावती ||65

13) भारतीय स्वातंत्र्यानंतरची पत्रकारिता
प्रा. मोहन बाबुराव चव्हाण, मोदीखाना सोलापूर ||69

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

01

AN INDIAN PERSPECTIVE ON DIRECT TAXES: PERSONAL INCOME TAX AND CORPORATE TAX

Dr. N. P. Biradar
Associate Professor, Department of Economics, S. S. Arts and Commerce College, Babaleshwar, Vijayapur, Karnataka

Abstract

Taxation serves as a crucial revenue source for governments, significantly impacting the economic development of a country. A well-designed tax structure, which promotes business ease and minimizes opportunities for tax evasion, contributes to the prosperity of an economy. Conversely, a tax system lacking measures to prevent tax evasion and hindered business facilitation hampers a country's economic growth. Hence, the taxation structure plays a vital role in a nation's progress. India boasts a well-established taxation framework, with the authority to impose taxes and duties allocated among the three tiers of government in accordance with the provisions of the Indian Constitution. This study exclusively relies on secondary data and various websites the Government of India maintains.

Key-words: Indian Economy, Impact, Direct Taxes, Personal Income Tax and Corporate Tax

Introduction

Taxation in India is implemented by both the Central Government and State Government, with additional minor taxes imposed by local authorities like municipalities and local governments. In the past five years, the central and state governments have undertaken significant policy reforms and process simplification initiatives, aiming to enhance productivity, fairness, and automation.

Statement of Problem

The responsibility of a government in any country is to ensure that its citizens have access to fundamental amenities that enhance their quality of life. This is primarily because individuals are unable to independently provide these amenities on their own.

Literature Review

Numerous studies have been conducted on various aspects of income tax structure, encompassing personal income tax and corporate tax. The Indian Taxation Enquiry Committee (1924) was appointed by the government of India with the objective of examining the taxation burden on different societal groups, ensuring tax equity, and proposing alternative sources of taxation. Led by Charles Todhunter, the committee put forth several recommendations to enhance income taxation, including:

1. Allowing the carry-forward and set-off of losses sustained in one year against subsequent years.
2. Taxing the income of married couples based on their combined income at applicable rates.
3. Treating companies formed solely for the purpose of tax avoidance through the withholding of dividends as firms.
4. Granting authority to officers to determine the liabilities of unregistered firms in certain cases, as if they were registered, if deemed reasonable.

These recommendations aimed to improve the effectiveness and fairness of the income tax system.

Objective

1. The objective of this study is to assess the contribution of personal income tax and corporate tax to the economic growth of India. It aims to examine the extent to which these tax types have played a role in fostering economic development and prosperity within the country.

डॉ. महानंदा बी. पाटील

शिक्षा : एम.ए. (कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड) एम.कॉम. (कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड), एम.फ़िल., पी-एच.डी. (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड), इलेक्ट्रॉनिक डेटा प्रोसेसिंग एण्ड कम्प्यूटर मॅनेजमेंट (डॉ. राजेंद्र प्रसाद इन्स्टिट्यूट ऑफ़ कम्युनिकेशन एण्ड मैनेजमेंट, मुम्बई)

प्रकाशन: समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श (संपादित), वाणिज्य, प्रबंधन और कम्प्यूटर विज्ञान (संपादित)

संप्रति : प्रतिष्ठित बी.एल.डी. ई. संस्था के ए.एस. पाटील वाणिज्य महाविद्यालय (स्वायत्त), विजयपुर में पिछले २० वर्ष से अध्यापन कार्य का अनुभव

- बोर्ड ऑफ स्टडीज की सदस्य
- महाविद्यालय के महिला मंच और यौन उत्पीड़न विरोधी सेल के समन्वय पद पर कार्यरत

E-mail : drmbpatil@bldeaspcc.ac.in

आर. के. पब्लिकेशन
मुम्बई

ISBN 978-93-91458-72-0

978-93-91458-72-0

आलेख

समकालीन हिन्दी भाषा और साहित्य : विविध आयाम डॉ. महानंदा पाटील

समकालीन हिन्दी भाषा और साहित्य
विविध आयाम

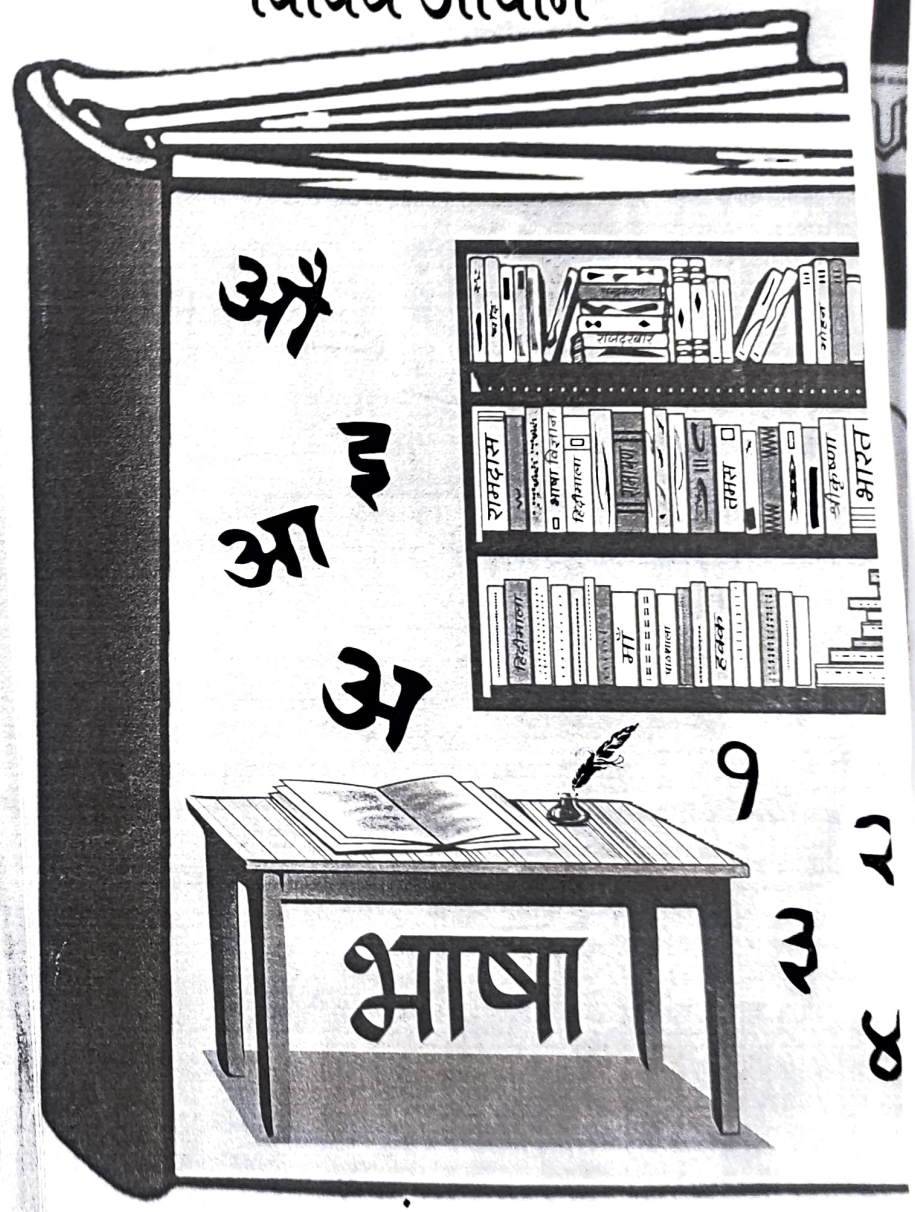

संपादक

ISBN : 978-93-91458-72-0

Copyright © Reserved

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 1100/-

शीर्षक	Title
समकालीन हिन्दी भाषा और साहित्य : विविध आयाम	Samkaleen Hindi Bhasha aur Sahitya : Vividh Aayam
संपादक	Editor
डॉ. महानंदा पाटील	Dr. Mahananda Patil
प्रकाशक	Publisher
आर.के. पब्लिकेशन	**R. K. Publication**
1/12, पारस दूबे सोसायटी, ओवरी पाडा, एस.वी.रोड, दहिसर (पूर्व), मुम्बई - 400 068	1/12, Paras Dubey Society, Ovari Pada, S. V. Road, Dahisar-East, Mumbai - 400 068

Phone : 9022 521190 / 9821251190

E-mail : publicationrk@gmail.com

Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र

virar.mishra63@gmail.com

आवरण : सुनील निंबरे, विद्या उम्मजीं

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

ए.एस.पाटील वाणिज्य महाविद्यालय (स्वायत्त), मुम्बई हिन्दी अकादमी तथा बी.एल.डी.ई. संस्था एस.बी.कला. एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 'समकालीन हिन्दी भाषा और साहित्य : विविध आयाम' विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के अवसर पर-

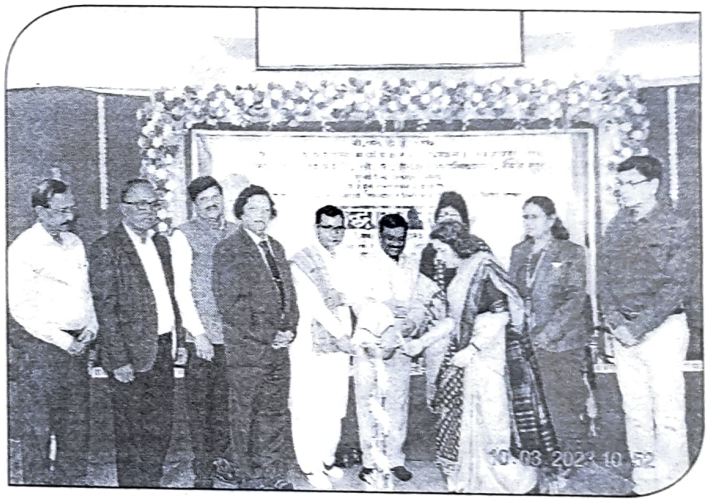

मध्य में उद्घाटक प्रो. डॉ. बी. एस. नावी (कुलसचिव कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर), **बायीं तरफ** मुख्य अतिथि श्री पवन तिवारी (अध्यक्ष, मुम्बई हिन्दी अकादमी), **बीज वक्ता** प्रो. डॉ. अर्जुन चव्हाण (पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर), प्रो. एस.जी. रोडगी (प्राचार्य, ए.एस.पाटील वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर), प्रो. एस.जी. ताळिकोटी (कोषाध्यक्ष, पूर्व छात्र संघ, ए.एस.पाटील वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर), प्रो. सी.एन. चौगुले (प्राचार्य, एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर) **दायीं तरफ** श्रीमती अरुणा सब्बरवाल (हिन्दी कथाकार, लंदन), डॉ. अनिता कपूर (पत्रकार एवं अनुवादक, कैलिफोर्निया, अमेरिका), डॉ. महानंदा पाटील (हिन्दी विभाग, ए.एस.पाटील वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर) और दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की संयोजिका, डॉ. आर. बी. कोटनाळ (मुख्य व्यवस्थापन अधिकारी, बी.एल.डी.ई. संस्था, विजयपुर)

समकालीन हिन्दी कहानियों में दलित विमर्श

- प्रा. जी. पी. साळे

भारतीय समाज सदियों से वर्ण व्यवस्था की बेड़ियों में जकड़ा रहा है और इस वर्ण व्यवस्था की कलुषित मानसिकता ने मनुष्य, मनुष्य के बीच अलगाव पैदा कर भारतीय समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र में बांट दिया। इसी व्यवस्था के चलते सबसे निकृष्ट वर्ग को शिक्षा और ज्ञान की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित कर दिया गया और उनकी धार्मिक अनुष्ठान एवं कार्यों में उपस्थिति निषिद्ध कर दी गई। उनको केवल ऊपरी तीनों वर्णों की सेवा और अपने अधिकारों से वंचित कर उनका जीवन नरक तुल्य बना दिया गया।

साहित्य समाज का दर्पण है, जिसमें ऐसे समाज में घटने वाली घोर विडंबना का प्रतिबिंब साहित्य में होना आवश्यक है। प्राचीन समय से लेकर समकालीन समय तक दलित चेतना किसी-न-किसी रूप में पाई जाती है। लेकिन इसकी व्यापकता आधुनिक काल में आकर एक साकार रूप धारण करती है जहाँ पर दलित समाज अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष करता हुआ नजर आता है और अपने अधिकारों की माँग भी करता है। कहानी के क्षेत्र में जिन दलित लेखकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की है उनमें प्रमुख ओमप्रकाश वाल्मीकी, सूरजपाल चौहान, दयानंद बटोही, सुशीला टाकभौंरे, डॉ. एन. सिंह, मोहनदास नैमिशराय आदि महत्वपूर्ण हैं ।

'दलित' शब्द का अर्थ है, दबाया गया, कुचला गया, उत्पीड़ित। भारतीय सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में 'दलित' संबोधन वर्ण व्यवस्था के निम्न पायदान पर होने के कारण शताब्दियों से शोषण, दमन एवं सामाजिक असमानता के शिकार असवर्ण वर्ग के लिए किया जाता है। जब वर्ण व्यवस्था कर्मानुसार न होकर जन्मानुसार हो गयी तो शुद्र समझी जाने वाली जातियों को शिक्षा एवं सामाजिक न्याय से वंचित होना पड़ा और कालांतर में इनकी अस्मिता विलीन हो गयी।

समकालीन शब्द 'सम' उपसर्ग तथा कालीन विशेषण के योग से बना है। सम उपसर्ग का प्रयोग प्राय: 'एक ही अथवा एक साथ' के अर्थ में होता

है। कालीन का यहाँ अर्थ है काल में अथवा समय में। अत: समकालीन का सामान्य तथा शब्दिक अर्थ एक ही समय में होने या रहनेवाले के रूप में स्पष्ट होता है। मानक हिन्दी कोश में इस प्रकार अर्थ दिया गया है, जैसे कि, "जो उसी काल या समय में जीवित या वर्तमान रहा हो, जिसमें कुछ और विशिष्ट लोग भी रहे हो। एक ही समय में रहने वाले। जैसे महाराणा प्रताप अकबर के समकालीन थे। नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार समकालीन शब्द का अर्थ है, जो एक ही समय में हुए हो।"[1]

डॉ. आम्बेडकर जी ने दलित वर्गों के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक अधिकारिकता के लिए संविधान के माध्यम से जो क्रांतिपूर्ण कार्य किया उसी का यह परिणाम है कि आज यह वर्ग अपने हक के लिए संघर्ष कर रहा है और संघर्ष में समकालीन कहानियों ने भी साथ दिया है। दलित साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से इनकी पीड़ा, व्यथा को समाज के सामने बड़ी मजबूती के साथ रखने का प्रयास किया है।

हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श अथवा दलित चिंतन का उद्देश्य दलितों की वेदना- व्यथा को सर्वसमाज के समक्ष रखना, उसका अहसास कराना तथा साथ ही दलित वर्ग के मन में जागरुकता पैदा करना, उनकी अस्तित्व रक्षा की भावना को जाग्रत करना तथा स्वयं के बारे में सोचने समझने को मजबूर करना, वर्तमान समय में अपनी वस्तुस्थिति से परिचित करना है।

दलित विमर्श का प्रारंभ मराठी साहित्य से हुआ, उसके उपरांत हिन्दी, गुजराती, कन्नड, मलयालम, तेलगु और तमिल में भी दलितों द्वारा रचित साहित्य के स्वर सुनायी देने लगे है । हिन्दी में ओमप्रकाश वाल्मिकि, सूरजपाल चौहान, दयानंद बटोही, सुशीला टाकभौरे, डॉ. एन. सिंह. मोहनदास नैमिशराय, कँवल भारती, डॉ. धर्मवीर प्रभृति आदि अनेक दलित साहित्यकारों ने दलित समाज की स्थिति और आवश्यकताओं को रेखांकित किया है। मोहनदास नैमिशराय ने कहा है कि, "दलित साहित्य दलितों का ही हो सकता है, क्योंकि उन्होंने जो नारकीय उपेक्षापूर्ण जीवन भोगा है वह कल्पना की वस्तु नहीं वह उनका भोगा हुआ यथार्थ और जख्मी लोगों का दस्तावेज है।"[2]

दलित साहित्य के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए डॉ. जयप्रकाश कर्दम

कहते हैं कि, "दलितों द्वारा लिखा गया ऐसा साहित्य दलित साहित्य है जो उन्हें अपना दमन और शोषण करने वालों के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित करे उनके अंदर सम्मान और स्वाभिमान से जीने की भावना पैदा करे। भाग्य, भगवान, परलोक आदि में विश्वास की बजाय वैज्ञानिक सोच का विकास करे। वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था सहित उन तमाम शोषण मूलक व्यवस्थाओं का विरोध करने की सीख दे जो असमानता, अन्याय और अमानवीयता का जनक या पोषक है।"[3]

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सर्वप्रथम मध्यकालीन संतों के काव्य में जातिगत संकीर्णता की सशक स्वर में भर्त्सना दिखायी देती है जो नामदेव, कबीर, रैदास आदि संत कवि जो निम्न जातियों से आये थे, जातिवादी व्यवस्था पर उन्होंने तीव्र प्रहार किया है। किन्तु वह एक परमतत्व का दर्शन करने वाली भारतीय संस्कृति का उदघोष मात्र रह गया।

आधुनिक काल के अंतिम दो दशकों के दलित साहित्यकार दलित साहित्य की परंपरा कबीर, रैदास, वाल्मीकि या व्यास से न मानकर आधुनिक चेतना जनित मानते हैं। इस संबंध में श्योराज सिंह बेचैन लिखते हैं, "दलित साहित्य का संबंध कबीर, रैदास जैसे दलितों के साहित्य से नहीं है और न व्यास और वाल्मीकि के साहित्य से। कबीर और रैदास उन्हें ईश्वर के सहारे छोड़ देते हैं और वाल्मीकि एवं व्यास तो ब्राह्मण वाद को ही मजबूत करते हैं। आज का दलित साहित्यकार अपने अनुभव से अपना रास्ता निकालने का रिती है। उसमें क्रोध नफरत, नकार और आत्म पहचान का तत्व प्रमुख है। वह इतिहास की धारा में बहने के लिये नहीं, उसकी ज्यादतियों के विरुद्ध संघर्ष करने और उसे पलटने के लिये कटिबद्ध है। वह बाबा साहब आम्बेडकर और ज्योतिबा फुले का अनुयायी है।"[4]

दलित साहित्यकारों ने अपनी कहानियों में फैली विसंगतियों और अराजकता को खत्म करने का मार्ग खोजने का प्रयास किया है। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर दलित साहित्य के आधार हैं उनकी विचारधारा ही दलित कहानियों का प्राण तत्व है। वे जाति व्यवस्था को संपूर्ण रूप से नष्ट करना चाहते थे। इनसे प्रभावित दलित साहित्यकारों ने अपने समाज में फैले आडंबर और सामंतवादी मानसिकता को भी खत्म करने का आव्हान

किया है। दलित साहित्यकारों का मानना है कि समाज और साहित्य में अपना सम्मानित स्थान बनाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया है और उन्होंने डॉ. आम्बेडकरजी से प्रेरणा ली। आम्बेडकरजी ने दलितों को शिक्षित करने के लिए संकल्प करते हुए सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं के साथ अपने व्यक्तिगत प्रयास के द्वारा शिक्षित करने का प्रयास किया। वे कहते है कि शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो एवं अप्पो दीपो भव अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो इन्हीं शब्दों ने दलितों को संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर जी का मानना है कि, "प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित किया जाना चाहिए। हर एक व्यक्ति में अपनी रक्षा की क्षमता होनी चाहिए। अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए, प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह बहुत जरूरी भी है।"[5] स्वाधिनता प्राप्ति के बाद दलितों के मन में यह आशा आकांक्षा थी कि अब रुढीवादी की परंपरा का अंत होगा छुआछूत की भावना से हम मुक्त होंगे। संविधान के अनुसार शिक्षा तथा नौकरियों में हमें आरक्षण मिलेगा कुछ हद तक दलितों की स्थिति में सुधार हुआ और दलित शिक्षित होने लगे, नौकरिया मिलने लगी किन्तु समानता नहीं मिली।

हिन्दी साहित्य में दलितों के जीवन से जुड़ी समस्याओं को चित्रित करने में सर्वप्रथम प्रेमचंद का नाम आता है। दलित जीवन से संबंधित उनकी सद्गति, ठाकुर का कुआ, दूध का नाम और मंदिर उल्लेखनीय कहानियाँ है निराला ने 'चतुरी चमार' कहानी दलित जीवन पर लिखी है।

दलित कहानियों का जब हम विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि दलित कहानियाँ मुख्य रूप से तीन प्रकार की श्रेणियों में आती है- आदर्शवादी यथार्थ परक और चेतनामूलक। दलित साहित्य का आरंभ 1980 के बाद आत्मकथा लेखन से हुआ। प्रसिद्ध दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि की चर्चित आत्मकथा 'जूठन' को हंस में प्रकाशित किया जिसने संपूर्ण भारतीय साहित्य में अपना स्थान बनाया। दलित कहानियाँ दलित जीवन को न केवल अभिव्यक्त करती है बल्कि अपने आस-पास के समाज का भी चित्रण करती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने 'अपनी सलाम' कहानी में अनुभूति की प्रामाणिकता को प्रस्तुत करती है। वह न केवल दलित

जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति करती है बल्कि सवर्ण मानसिकता को भी प्रस्तुत करती है। सलाम कहानी में परंपरा का विरोध और दलित प्रतिरोध का चित्रण है। जयप्रकाश कर्दम दलित साहित्य के बड़े लेखक है जिन्होंने तो बार कहानी में नौकरी पेशा दलित युवक की कहानी को दर्शाया है। डॉ. सी.बी. भारती ने 'भूख' कहानी में बंजारा समाज की महिलाओं पर होनेवाले शोषण को बताया है। भगीरथ मेघवाल की कहानी सूरज की 'चिता' अंतर्जातीय विवाह पर आधारित कहानी है। डा. कुसुम बियोगी की कहानी और वह पढ़ गयी में एक मैला साफ करने वाली लड़की की खानी है। डॉ. दयानंद बटोही ने सुरंग में एक उच्च शिक्षित दलित युवक बेकारी की समस्या का चित्रण किया है। बिपिन बिहारी ने अपनी सीमायें में कठोर जाति व्यवस्था को समाज के सामने रखा है। उदय प्रकाश की 'छतरी' कहानी में चौधरी का कथन दलित बालक के प्रति सोच को उजागर करता है- "बेकार की बात मत करो। इसे किसी काम धंधे में लगा दो रोटी कमायेगा पढ़ लिख कर क्या करेगा न घर का रहेगा न घाट का।"[6] दलित कहानियों में दलितों के आँसुओं से उनके जीवन की दु:खभरी गाथाएँ दलित लेखकों ने प्रस्तुत की है। इन कहानियों द्वारा दलितों के वास्तविक जीवन, उनकी यातनाओं, पीड़ाओं और उनकी उपेक्षा हुई है, उसकी अभिव्यक्ति हुई है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जाता है कि देश में जातिवाद की समस्या बहुत भयानक है। आज दलित साहित्यकारों ने अपने अस्तित्व के लिए देश में फैली जातिवाद की समस्या को जड़ से खत्म करना आवश्यक समझा और आज वह निरंतर प्रयत्नशील रहा है। सदियों से शोषण का शिकार दलित वर्ग संघर्षरत है कि वह भी स्वतंत्रता, समानता एवं सम्मान को प्राप्त कर सके। उनका मानना है कि प्रकृति ने किसी के साथ भेद भाव नहीं किया तो समाज में भेदभाव क्यों? आज दलित साहित्यकार सहजता की ओर बढ़ रहा है। समाज में शोषित वर्ग की समस्याओं को सामने लाने वाले दलित साहित्य का भविष्य उज्ज्वल रूप में दिखाई देने लगा है।

संदर्भ सूची :-

1. संपादक डॉ. नवलजी, नालंदा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ- 404
2. प्रतियोगिता दर्पण, नवम्बर 2005
3. वाङ्मय- दलित विशेषांक, अंक 8 जनवरी-मार्च 2006, पृष्ठ- 124
4. प्रतियोगिता दर्पण, नवम्बर 2005
5. डॉ. बी. आर. आम्बेडकर, आचार्य जुगलकिशोर बौद्ध (अनुवादक) जातिभेद का बीजनाश, सम्पर्क प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ- 35
6. छतरी- ओम प्रकाश वाल्मीकि, कथादेश नवम्बर 2006

सहायक प्राध्यापक (अध्यक्ष हिन्दी विभाग)
श्री शांतवीर कला और वाणिज्य महाविद्यालय,
बबलेश्वर, जि. विजयपुर-586113

❖❋❖

डॉ. एस. ए. मंजुनाथ

कर्नाटक के जिला हासन के श्रवणबेलगोला में जन्म । माता–पिता स्व. श्रीमती सायम्मा और स्व. अंदानिगौडा । मैसूरु विश्वविद्यालय से बी. कॉम, एम.ए और पी.एच–डी, आगरा के केंद्रीय हिन्दी संस्थान से हिन्दी पारंगत (बी.एड) और इलाहाबाद के साहित्य सम्मेलन से हिन्दी साहित्यरत्न प्राप्त । "नरेंद्र कोहली का व्यंग्य साहित्य : एक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य । 1992 से हिन्दी अध्यापन के कार्य में संलग्न और वर्तमान में पोंपै कॉलेज, ऐकला, मंगलूरु में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में सेवारत । "नरेंद्र कोहली का व्यंग्य साहित्य : एक अध्ययन", "हिन्दी के व्यंग्य सर्जक नरेंद्र कोहली", "हिन्दी व्यंग्य साहित्य एक समीक्षात्मक अध्ययन", "हिन्दी में व्यंग्य विमर्श एवं नरेंद्र कोहली", "सुबोध हिन्दी व्याकरण", "प्रयोजनमूलक हिन्दी", "सरल हिन्दी व्याकरण और रचना" और "नवीन हिन्दी व्याकरण" विषय पर पुस्तक प्रकाशित है । "मार्गदर्शी", "हिन्दी मंगला", "विहास वाहिनी", "विहास वाणी", "आधुनिक हिन्दी काव्य : एक अवलोकन","विहास मंगला", "हिन्दी कहानी और वर्तमान समय", "अमृत काव्य धारा" और "भारतीय संत साहित्य परंपरा" नामक पुस्तकों का संपादन कार्य संपन्न है। हिन्दी और कन्नड दोनों भाषाओं में "भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कृत साहित्यकार" नामक पुस्तक प्रकाशनाधीन है। भगवानदास मोरवालजी का एक चर्चित उपन्यास "शकुतिका" का कन्नड भाषा में अनूदित और पुस्तक प्रकाशित है । कुल मिलाकर 25 पुस्तकें प्रकाशित हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में लगभग 50 शोध पत्रों की प्रस्तुति और प्रकाशित हैं। तीन पी–एच.डी और सात एम. फिल शोधकार्य में मार्गदर्शन। लगभग 15 राष्ट्रीय हिन्दी कार्यशाला एवं संगोष्ठियों का आयोजन। अखिल भारतीय हिन्दी महासभा के राष्ट्रीय सचिव और शोध जर्नल के संपादक मंडल के सदस्य है। वर्तमान में कर्नाटक राज्य विश्वविद्यालय महाविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ, बेंगलूरु, कर्नाटक के अध्यक्ष, मंगलूरु विश्वविद्यालय कॉलेज अध्यापक संघ (अमुक्त) के उपाध्यक्ष और कर्नाटक राज्य विश्वविद्यालय कॉलेज अध्यापक संघ, बेंगलूरु के सह सचिव हैं । Email: manjuspc66@gmail.com मो. 9449546665

Also available at : Flipkart amazon

विकास प्रकाशन, कानपुर

311 सी, विश्वबैंक बर्रा, कानपुर–208027

शोरूम : 110/138 मिश्रा पैलेस, जवाहर नगर, कानपुर–12

मोबाइल : 9415154156, 9450057852

E-mail : vikasprakashankanpur@gmail.com
vikasprakashanknp@gmail.com

Website : www.vikasprakashan.com

ISBN 978-93-95922-48-7

9 789395 922487

₹ 950.00

आवरण चित्र : साभार नेट

कबीर और बसवेश्वर : एक तुलनात्मक अध्ययन

संपादक

डॉ. एस. ए. मंजुनाथ

कबीर और बसवेश्वर

एक तुलनात्मक अध्ययन

संपादक

डॉ. एस. ए. मंजुनाथ

उप–संपादक

डॉ. ए. वी. सूर्यवंशी **डॉ. विनय कुमार यादव**

15

कबीरदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. जि. पि. साले

कबीरदास जी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के कवि संत, भक्त, समाज सुधारक और फकीर थे। कबीर के आगमन काल की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, साहित्यिक परिस्थितियों का अवलोकन इस दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगा। क्योंकि इन परिस्थितियों का कबीर के कवि व्यक्तित्व के निर्माण में पर्याप्त हाथ रहा है। इस संदर्भ में दिनकर जी कहते हैं- "हर कवि अपने युग का ही कवि होता है और साथ ही यह भी कि हर युग अपने कवि की प्रतीक्षा किया करता है। इसीलिए साहित्य मूल रूप से शाश्वत और कालजयी अवश्य हो, किंतु समग्रतः वह काल-सापेक्ष और देश-सापेक्ष ही रहता है।" उन्होंने अपनी सत्य अनमोल वाणी के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन और कल्याण करने का प्रयत्न किया। जिसके जरिए मनुष्य निंदा, अहंकार, कुसंगति, छल कपट, जाति भेदभाव, धार्मिक अंधश्रद्धा आदि को समाप्त करके एक सच्चा मनुष्य बन सके। कबीरदासजी स्वयं शांतिमय जीवन बिताते हुए अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि का मार्ग अपनाकर लोगों को भी उसी राह पर चलने को प्रेरित करते थे। उन्होंने समाज में चल रहे अंधविश्वासों, रूढ़ियों पर करारा प्रहार किया और ऐसा मार्ग अपनाया जिससे समाज में फैली हुई बुराइयों को दूर किया जा सके। कबीरदास ने अपना सारा जीवन साहित्य के माध्यम से मानव जाति का कल्याण करने के साथ समाज में प्रत्येक व्यक्ति को गौरवमय जीवन बीताने के लिए प्रेरित किया। जिसे अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को मूल्यवान बना सके। उनके साहित्य में मुख्य रूप से समाज सुधारक की भावना स्पष्ट देखने को मिलती है। कबीर सिर्फ संत कवि ही नहीं बल्कि युगीन संदर्भ के सच्चे मार्गदर्शक भी थे। कबीरदास के सुधारवादी दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए विद्वान श्री प्रकाश गुप्त ने कहा है कि "यद्यपि सुधार करना या नेतागिरी की प्रवृत्ति फक्कड़ मस्तमौला संत कबीर में नहीं थी, किंतु वे समाज के कूड़ा-कर्कट या कुरूप को निकाल फेंकना चाहते थे। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण वे स्वतः सुधारक बनना चाहते

हुए भी राम-दिवाने थे। कबीर को सुधारक का पद प्राप्त हो ही जाता है। वास्तव में तो वे मानव के दुःख से उत्पीड़ित हो उसकी सहायता के लिए चले। जनता के दुःख-दर्द और उसकी वेदना सरस्वती बही थी।" कबीरदास ने अपने काल में स्थित अनेक मतभेद का निवारण करने का सार्थक प्रयास किया है।

भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य के महाकवि संत कबीरदास की जन्म तिथि को लेकर अनेक विद्वानों में मतभेद है फिर भी अधिकांश विद्वानों का मानना है कि उनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी कोख से संवत 1455 में काशी में हुआ था जिसने लोक लाज के कारण भयभीत होकर लहरतारा नामक तालाब के किनारे छोड़ दिया था। जहाँ से मुसलमान परिवार नीरू और नीमा ने ले जाकर इनका पालन-पोषण किया। इनकी पत्नी का लोई था। इनके दो संतान कमाल और कमाली थे। उन्होंने अपना गुरु रामानंद जी को स्वीकार किया था। कबीरदासजी सूफी मत के संपर्क में आने के कारण सूफी धर्म के तत्व सिद्धांत से भी प्रभावित हुए। कबीरदास पढ़े-लिखे नहीं थे, फिर भी प्रस्तुत युग के समर्थ कवि समाज सुधारक के रूप में अवतरित हुए हैं। इस तरह उनके जीवन की अंतिम यात्रा मगहर में संवत 1575 में समाप्त हो गयी।

रचनाएँ- संत कबीरदास जी का साहित्य प्रामाणिक और लोक-प्रिय है जिन्होंने बीजक ग्रंथ की रचना की है। इसके तीन भाग होते हैं- साखी, सबद और रमैणी। कबीरदास के काव्य में उपलब्ध विविध विशेषताएँ हमें देखने को मिलती हैं-

निर्गुण ईश्वर में विश्वास

कबीरदास जी निर्गुण निराकार ईश्वर में विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि ईश्वर कण-कण में वास करता है। उनका मानना है कि ईश्वर हमारे हृदय में रहता है, उसे बाहर कही तीर्थ-स्थलों, मंदिरों, मस्जिदों और अन्य जगह पर ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं। इसके लिए कहते हैं-

"कस्तूरी कुण्डली बसै, मृग ढूढ़ें बनमाहि।
ऐसै घटि-घटि राम है, दुनिया देखे नाहिं॥"[1]

इसी कारण की वजह से वे अवतारवाद, बहुदेववाद और पूजा का खंडन करते थे। धर्म के मार्ग में प्रचलित सभी परपंराओं और संप्रदायों को अस्वीकार करते हुए यह मानते थे कि किसी भी स्थान पर, किसी भी मनुष्य के द्वारा ईश्वर की प्राप्ति की जा सकती है। इसलिए उन्होंने वेदों और शास्त्रों में कही गई पूजा-पद्धतियों की कटु आलोचना की है।

जातिवाद का विरोध

कबीरदास ने जाति-पाति का डटकर विरोध किया है। उन्होंने समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था तथा छुआछूत को अमानवीय समझकर मानवता को महत्व दिया था।

कबीरदास का कहना है कि हम सब मनुष्य है और भगवान ही सबका सृष्टि करता है। वे सदाचार पर बल देते हुए कहते हैं कि भक्ति के क्षेत्र में आडंबरों की आवश्यकता नहीं बल्कि सद्भावना की जरूरत है। हरि की भक्ति सद्भावना से की जाना चाहिए। भगवान की नजरों में सब समान हैं। इसलिए भक्ति के मार्ग पर जाति-पाति को महत्व न देकर सद्कर्म को प्रधानता देते कहते हैं-

"जात पात पूछेना कोई,
हरि को भजो सो हरिका होई।"[2]

आडंबरवाद का विरोध

संत कबीरदास जी ने हिंदू एवं मुस्लिम धर्म में व्याप्त अंधविश्वास और सांप्रदायिक भावना का विरोध किया है। उन्होंने हिंदुओं की मूर्ति पूजा और मुसलमानों की हज, नमाज रोजा आदि की आलोचना करते हुए कहा-

"पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।
तातें तो चाकी भली पीस खाये संसार॥"[3]

"कंकर पाथर जोरि कै मस्जिद लई बनाय।
तां मुल्ला चढ़ी बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।"[4]

संत कबीर कहते हैं कि भगवान की प्राप्ति सहज भक्ति से संभव है। भक्त को ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए, तभी वह अपने जीवन को सफल बनाता है और भविष्य में एक अच्छा व्यक्ति बनता है।

प्रेम का प्रचार और अहंकार का त्याग

कबीरदास ने अपने युग के अमानवीय तत्वों का विरोध करते हुए परस्पर मेल-मिलाप और प्रेम का समन्वयात्मक जीवन बिताने का उपदेश दिया है। वे ज्ञानमार्ग को प्रेम से साध्य कहते हैं-

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जगमुआ, पण्डित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय ॥"[5]

धार्मिक पाखंडवाद का खंडन

कबीरदास जी ने धार्मिक पाखंडवाद का विरोध किया है। वे कहते हैं कि जो दिन भर व्रत रखते हैं, लेकिन रात को गाय का मांस खाते हैं। वे कहते हैं कि मुझे तो समझ नहीं पाता कि ईश्वर कैसे खुश होता है। वे समाज में व्याप्त पाखंडवाद का खंडन करते हुए कहते हैं-

"दिनभर रोजा रहत है, रात हनत हैं गाय।
यह तो खून व बन्दगी, कैसे खुशी खुदाय॥"[6]

कथनी और करनी का विरोध मनुष्य का जीवन निर्मल रहना आवश्यक है।

कबीरदास जी ने कथनी तथा करनी में भेद रखने वाले व्यक्तियों का विरोध किया है। उनका मानना है कि व्यक्ति जो कुछ बोलता है उसे ही कर दिया जाय या केवल कहने से जीवन में काम सफल नहीं हो पाता है। इसलिए उन्होंने कथनी और करनी के भाव को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि-

"कथनी मीठी खाँड-सी, करनी जो बिस होय।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होय ॥"

दार्शनिक सुधार का भाव

संत कबीरदास जी ने अपने युगीन संदर्भ की धार्मिक दार्शनिक भावनाओं को समन्वय का रूप देने का प्रयास किया है। वे बौद्ध, सिंद्ध, वैष्णव नाथों वैष्णव, हिंदू और इस्लाम धर्म के कट्टर नियम को गंभीरता से अवलोकन किया। इनके परस्पर विभिन्न मतों को समन्वय का मार्ग दिखाने का प्रयास किया जो सामान्य जनता के लिए भी उपयुक्त हो सके। कबीरदास ने दशरथ पुत्र राम को परम-परमेश्वर मानने वाले हिंदुओं को फटकारते हुए कहते हैं कि-

"दशरथ सुत तिहुँ लो कब खाना।
राम नाम काम राम न जाना ॥"

रहस्यवाद की भावना

संत कबीरदास जी के काव्य में रहस्यात्मक भावना का दर्शन होता है। उनका रहस्यवाद ब्रह्म जिज्ञासा का रूप है। वास्तव में कबीर ने ऐसे पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया, जो प्रतीकात्मक लगते हैं। उन्होंने अजपाजाप, अनहनाद, उन्मनी अवस्था, उल्टी गंगा, इडा, सहश्रार, चक्र पिंगला, सुषुम्ना, षटचक्र, अनाहतचक्र, महाशून्य ब्रम्हाग्नि आदि ऐसे रहस्यात्मक प्रतीकात्मक शब्द प्रयोग किया है। कबीर ने विरहिणी आत्मा का रूपक बाँधकर आत्मा-परमात्मा के प्रेम का चित्रण किया है। आत्मा रूपी प्रेमिका परमात्मा रूपी प्रेमी के विरह में अत्यधिक व्याकुल है। उसके मन में प्रियतम को मिलने की अभिलाषा है। उनके रहस्यवाद पर शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रभाव देखने को मिलता है। इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहते हैं कि-

"जल में कुंभ कुंभ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूट्यो कुंभ जल जल हि समाना यह तत कह्यो ग्यानी।"[7]

गुरु की महिमा का गुनगान

कबीर ने किसी मकतब, पाठशाला या विद्यालय में प्रवेश लेकर किसी गुरु से विद्या नहीं पड़ी थी। उनका कोई नहीं था। कबीर ने गुरु के बिना भी ज्ञानार्जन किया जा सकता इस बात को अनुभव की पाठशाला में सीख लिया था। कबीरदास जी ने गुरु को अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार भगवान से भी श्रेष्ठ गुरु है। इसलिए

कबीर ने रामानंद को अपना गुरु मान लिया है। उनका कहना है कि गुरु ही शिष्य को परमात्मा से मिलने का मार्ग दिखाता है। इस लिए कहते कि-

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो बताय॥"[8]

कबीरदास जी ने कहा है कि गुरु की सहायता से शिष्य भगवान तक पहुँच सकता है। गुरु की कृपा से भक्त अपना सारा संकट पार कर सकता है।

कबीरदास के व्यक्तित्व का एक महान पक्ष समन्वयवादी रहा है। वे समग्र रूप से समाज, धर्म, दर्शन, राजनीति आदि के क्षेत्र में समन्वय चाहते थे। वे समाज में किसी प्रकार का असंतुलन नहीं चाहते थे। इस बात को स्पष्ट करते हुए हिन्दी साहित्य के महान विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीजी ने कहा है कि "कबीर ऐसे ही मिलन बिंदु पर खड़े थे जहाँ से एक ओर हिंदुत्व निकल जाता है और दूसरी ओर मुसलमानत्व, जहाँ एक ओर से ज्ञान निकल जाता था और दूसरी ओर शिक्षा, जहाँ एक ओर भक्तिमार्ग निकल जाता था और दूसरी ओर योगमार्ग, जहाँ एक ओर निर्गुण भावना निकल जाती थी और दूसरी ओर सगुण भावना, उसी चौराहे पर खड़े थे। वे दोनों ओर देख सकते थे और परस्पर विरुद्ध दिशा में गये हुए मार्गों के दोष-गुण उन्हें स्पष्ट दिखाई दे जाते थे।"[9]

भाषा के डिक्टेटर

कबीर का अपनी भाषा पर जबरदस्त अधिकार था। वह वाणी के डिक्टेटर थे। उनकी भाषा जन-भाषा है। उनकी भाषा में राजस्थानी, पंजाबी, ब्रज-भाषा, खड़ी-बोली, पूर्वी हिंदी और फारसी आदि भाषा का सहज प्रयोग करके लोगों में सामरस्य स्थापित करने का प्रयास किया है। इसलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं- "भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा उसे उसी रूप में कहलवा दिया।

निष्कर्ष रूप में कहा जाता है कि कबीरदासजी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के निर्गुणमार्गी शाखा के एक महान संत, कवि, समाज सुधारक थे। कबीर अपने युग की परिस्थितियों से प्रभावित थे। इन परिस्थितियों से बाध्य होकर उन्होंने एक सुधारक कवि के रूप में अमूल्य योगदान दिया है। कबीर ने अपने युगीन सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग कर समाज में व्याप्त कुरीतियों और कुविचारों का खंडन किया है। कबीर समाज सुधारक के साथ-साथ एक क्रांतिकारी प्रवृत्ति के होने के कारण निडर भावना से समाज में चल रहे कुरीतियों पर अपने विचार व्यक्त किया है। उन्होंने एक ओर समाज में प्रेम की भावना जगाया तो दूसरी तरफ समाज और धर्म के नाम पर व्याप्त पाखंड, अंधविश्वास, हिंसा एवं पशुबलि, मूर्ति पूजा आदि का विरोध किया। वे अपने युग के

दार्शनिक थे। संत कबीर का संपूर्ण साहित्य समाज को एक सही मार्ग दिखाकर जीवन को उज्ज्वल बनाने के लिए उपयुक्त रहा है।

संदर्भ

1. मध्यकालीन काव्य-कौमुदी, संपादक डॉ. श्रीनिवास शर्मा, पृ.सं.23
2. कबीर ग्रंथावली, श्यामसुंदरदास, पृ. सं. 84
3. वही, पृ. सं. 65
4. बीजक, पृ. सं. 388
5. कबीर वचना मृत, सं. डॉ. विजयेंद्र स्नातक, डॉ. रमेश चंद्र मिश्र, पृ. 152
6. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. 65
7. कबीर ग्रंथावली, पद 44
8. हिंदी के प्राचीन-मध्यकालीन प्रतिनिधि कवि एवं अन्य कवि, ले. डॉ. अशोक तिवारी, पृ. 88
9. कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ. 77-78

★